

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

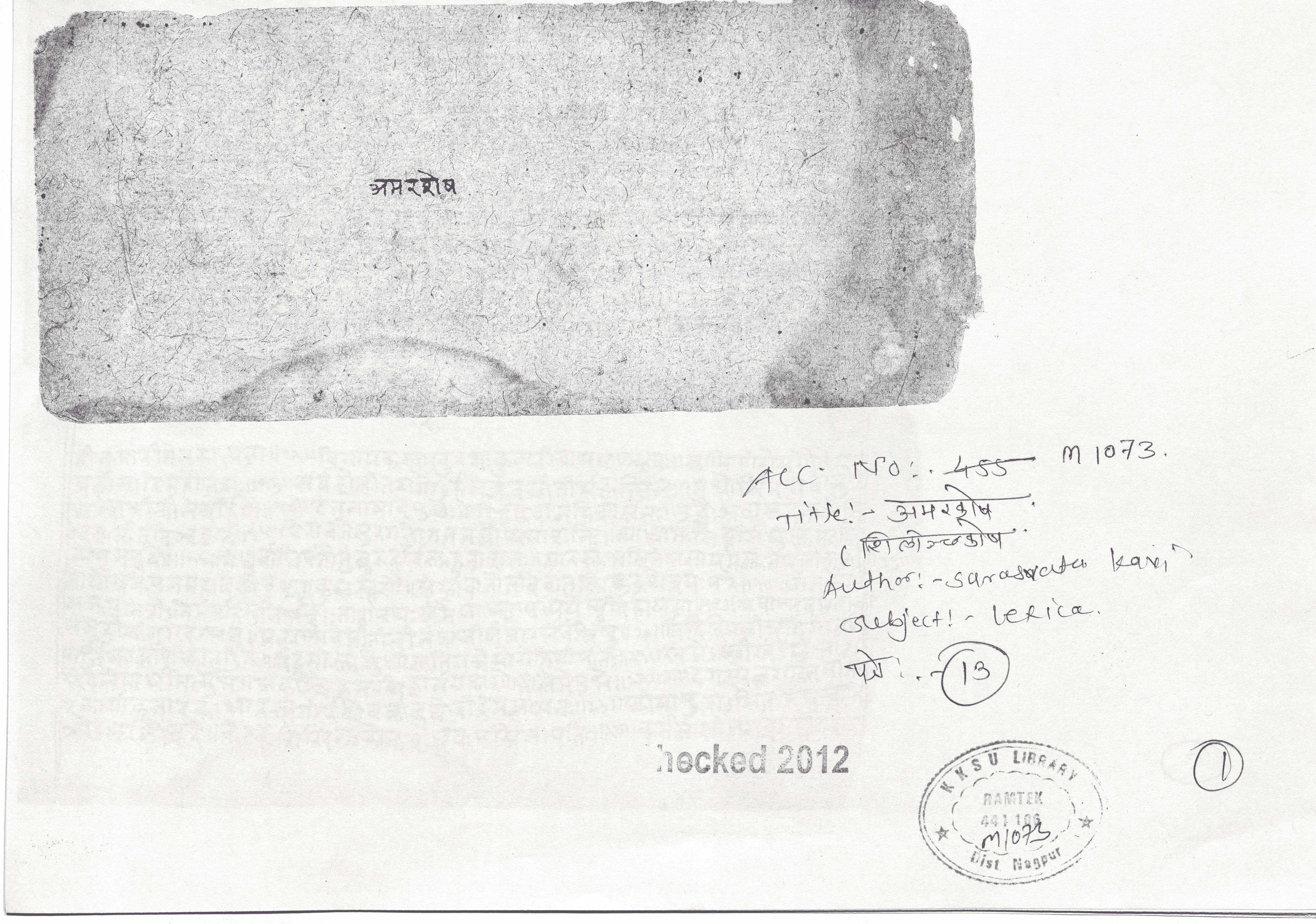
https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/



अग्रेग्ग्यामन मः। नाम् विगयतीताषाः संस्रायंत् तस्ते॥ प्रस्नेते तसेतसे प्रसे क्रिये न्या ।।।।।। व के निर्धानित ता नामां को व गें सिक्षं गर्नेः॥ वित ता कं र मुला के तस्ता में पर के सरी।। १०० के व प्रसित स्व के ति प्रे भा कि गर्नेः॥ वित ता कं र मूला के तस्ता में पर के सरी।। १०० के व प्रसित स्व के ति प्रशासिक ।।। सार व के प्रमानिक गर्ने के प्रमानिक व के प्रमानिक प्रमानिक गर्ने के प्रमानिक प्रमानिक गर्ने के प्रमानिक प्रमानिक गर्ने के प्रमानिक गरी के प्रमानिक गरी के प्रमानिक गरी के प्रमानिक गरी के

बीराबीरस्तित्हात्मष्ठभ्यस्तैन्वत्राहित्राहे । स्वित्राहे । स्वित्राहे

विन्धारी श्री क्रिया स्वर्ता । । । । । व्या स्वर्ता स्वर्ता स्वर्ता क्षेत्र स्वर्ता क्षेत्र स्वर्ता क्षेत्र स्वर्ता क्षेत्र स्वर्ता क्षेत्र स्वर्ता क्षेत्र स्वर्ता स

वारमावायाव मधी।

48013A

9

णिकागेष प्रिका ॥ १५ ॥ १६ देश वसरवे त्रातस्य नाया वसे ॥ जार को गान संको वी समा गरिनो छिन्।। १६॥ गरिनो छ के समा से छात नि का ने ह आ हु छ । त्राह्ण कर सम् हो मही मारे भो उपु ज को छिन ॥ १० ॥ भा छ दे जो इंत- मुक्त नी इंतर सम्मान प्राप्त है । वि के समा से छात के देश है के स्वार्त के ॥ १० ॥ सारिक मात्र गी मारे स्वार्त के स्वर्त के स्वार्त के स्वार्त के स्वार्त के स्वार्त के स्वार्त के स्व

त्मर्थे।

तयंद्वेतंयमंत्रयम्वेवततः। तयंत्रयीम् नित्रयंसम्हेतातमस्त्रियां॥१० ॥ इतिसंहिद्याः॥

तरान्तिमस्य गांदेतं प्रतिसह वरीमिमाः।वध्य तम् वस्यानिव तो का तमी वसः॥३० ।

तरान्तिमस्य गांदेतं प्रतिसह वरीमिमाः।वध्य तम् वस्यानिव तो का तमी वसः॥३० ।

तम्मस्यानिक स्मिद्वविश्वतम् इति । वरीपु वस्त ना देरस्त मेसं ति हिन्या । १० ।

पण्य स्मीपण रेद्वा स्मी वृद्धित् स्मान्ति । वसा नृत्रत् वस्त ना ना सावर्षात् वरः॥४० ।। १० ।। १० ।

उद्देश व्यवस्य स्मान्ति स्मान्ति । वसा नृत्रत् वस्त ना ना सावर्षात् वरः॥४० ।। १० ।।

10

स्त्री।१४ ९।विकानं त्व व लेस्मा द्वीका लिखा प्रमणि वं छः परिणाम् के नावः का मां कु ज्ञां क्रियं। १४० पुनर्भवस्त के स्मा है स्त ते के पत्र मिलिए। जा वर गं ज्ञा ते माने जा के ब समीव तर १ फा। ना सामा मं दिनी ग ले गड़ ने गं के में हिना । द्वि के में व का के ते का में ब क्रियो । प्राणि के में सिता में ते के का की पत्र के ते का समीव रीट को टी रे ता डे की की स्त्र में अपने में सिता में की सिता । कि पत्र में सिता में सिता में सिता में सिता में सिता । के पत्र में पत्र में पत्र में पत्र में सिता में

नः सवा सांजी मध्य मपांउवः। ति संः कितीरी बी भ-सः अवे तवा जी केपि ध्वतः। इते। प्या वुक् ती के सा उपार्या की द्वी पदी वसा। से वस्पाद्या के से ती व की वैसे विन समी। विश्वासी दिन्र मादियाः साह मानः नाकाननः। अर देवस्य िनिम्नोना हाळः स्पान्याने वाहनः॥ देव। यानः रातकात्र में सिव्या मानामिकाः। सीवितिक प्रतियाः स्पात्र रेखेयः स्पार्व्य द्यार्थः। यम्पित्रणीवे त्रीरंगरीवारिकश्वसः। नुक्यां करः प्रतीहारः प्रतीहारश्वषं समा। १९११ । उप दिस्त तक्ष्मपत्र व स्वास्त्रणी स्वास्त्र प्रतिहारश्वषं समा। १९११ । उप दिस्त तक्ष्मपत्र व स्वास्त्र प्रति स्वास्त्र प्रतिहार स्वास्त्र प्रतिहार स्वास्त्र प्रतिहार स्वास्त्र विद्या स्वास्त्र प्रतिहार स्वास्त्र स्वास्त्र प्रतिहार स्वास्त्र प्रतिहार स्वास्त्र । उपादा ते त्पना र ने की नो अं नपास मः। पिषु सक्ते पर्य तस्का ता भने की की प्रमाता दि।।

वत्रभागमाने विष्ठा बीरा किवं जा भरत्रां साम तः विष्ठे राजिता ध्यां अथा अव ने राज्य है। हिना अप माहिती से निगढ़ सक्यों की बेतुन वर्ष ने कुणाएं।। अभिवस की निग्न स्था की है। इस की अप के प्रकार में में कि से प्रणा हिंदी हैं। इस की अप के प्रकार में में से में से में से प्रणा हिंदी हैं। इस की अप के प्रकार में में से में से में से प्रणा हैं। श्रीवस की श्रीवसां के दुविनी तेतु सब्दा अश्रवा वती प्रस्त का व्यव राष्ट्रित र वेस्राः। एउ। विश्वा वेगसारे (ध्वपूर्णणं पञ्चमन् म्यास्त्रियं। स्वकी नेकविव्यं पुंतिर्से में विकास्त्रमा हिल्ल रथस्त्रव्य री भेराः यद्वाधः सा प्राणिकः। पोग्पार भेवे निष्को पाऽधिको पारिपातिकः॥ १९५० गां जा जी बार हिताबका अध्य बार पार या भारता अध्य दस्ता ने काहः नी मारिषद्परित्रषु ॥ भग आमित्राभित्राधित विकास में प्रतिपिता विकास मानित स्थाल के हितास मानित विकास स्थाल के हितास मानित विकास स्थाल के स्थान में प्रति स्थाल के स्थान में स्थाल के स्थ मारि: मीमाभातेने नाप बसे नेद्यं मानदेना कराविने। स्पार्वितियः प्रव्यणं प्राजनेस्ति। कं फर्का ११ प्रमितिये वाळी खळे तुरवळधान्यके । संती नकः स्पान्मातीनः सप्तावद्वाळको द्वी॥१७॥ तिरिळः स्पाद्वतीत क्रोगानिकारान्त्रसर्विपः।स मोत्वसूनिष्या बीतु बरीवार की स्त्रिमी।भाषाम्बर्गमानिकार ब्यां शान्ये धा न्य मुसे सप्ते। कुन्न बो कंव ती धान्य को के कश्चाध्य के पर ॥ १९ ए। करा हे पर रहे के स्मात्यधानमुदेनने। गार्कान्त्रयः ग्रायन् स्पात्स्यान्त्रं स्पाद्यान्त्रं महत्याप्रशासामान्त्र मुर् काञ्च तेत्र वित्र व त्या ग्रह्मिद्र इव व जाभ मा। सिर्दि शिभ्या सार्षि अंशिष्ठ के से हो ते त्र माता विश्व सि दिनिवं श्रिक्षिमाभाभा सरवेकात्र। पुन्तपुं मक्योभी मित्रधानाञ्च सत्त्रमन्त्री। १३। भाष पःस्पास्त्रविक्षमा सरायानुत्ति बोर्मे शिन्ने संस्थात्ववत्यं कर्षः करवः समे॥१२४। सन्ते क्री विञ्चेपीत तरणं स्पाय्योपं प्यास्त्राम् अत्रवणोधस्पद्गिवस्र दिवसिमे ॥ १५ । सहणा पर्य धिर्वः सं भ्र वाह् बः। छोउ न पर्वत्रा ने प्रयामा क्र रोष्मा नीवष्णा वः। ल्या स्पादी ने वीवा नड्

वरंभारति वर्गान्य। वर्गान्य। यात्रावानि वर्गानि विक्रां स्ति वर्गानि वर्गानि

न्तरेन्।

स्वतारिकः स्यास्वरास्वरास्वरास्वरास्वराममे देनाग बंध्विनः सुध्वरवत्रको मं यदं र दे । १००० मं तो ततं र दिक्षं निक्षे र विण्यम् को रासे विश्व में अध्यान्य को रासे से को प्रवेष प्रवेश में निक्षे प्रवास में ते प्रवेष प्रवेश में ते प्रवेष प्रवेश में ते प्रवेष प्रवेश में ते । १००० में ते विश्व मार्थ विश्व में १००० में हे । १००० में ते विश्व मार्थ विश्व में १००० में १०० में १००० में १००० में १००० में १००० में १००० में १००० में १०००

विष्य साम्य के प्रमान के

9

(8)

A)

विमुद्रा ववेदिका॥र्रधामयाने दंशिवतकोह्यास्त्रस्या वहे।स्या स्ह्रो के यह कि मुद्दे हिंचा विद्या है के कि स्वा के स्वा के स्व के

27

वयरणः स्यूणां स्वणं प्रतिमापिव। बंधा मिप्यस्तो द्या प्रया स्मेम् विकित्ति ने छ।। ६०।। मो मिने पित्र कातो द्रया व पाता व व रवी व ते।। सा योपिति मिने स्माहिपा के विगितः स्त्रिया।। धा प्राणि प्र ते रे पाया की प्रवा के स्वा के स्वा के स्व के स्

वंदव्य

引之 制气

रवः*

बासारे पिवे ज वं ४

24

द्रविशेषयोः।श्रम्भाभेदेषितिकः स्त्रीविशेष्ट्रक्षरणेष्व।८९।।पणमानेषितं वृद्धं क्रेकःसान्ति वृद्धं क्रेकःसान्ति वृद्धं क्रेक्ष्यः स्वाप्ति वृद्धं क्रेक्षः स्वाप्ति क्रेक्षः स्वाप्ते क्रेक्षः स्वाप्ति स्वापति स्व

MIO7S

(A)

,CREATED=26.10.20 11:56 TRANSFERRED=2020/10/26 at 11:57:57 ,PAGES=13 ,TYPE=STD ,NAME=S0004543 Book Name=M-1073-AMARKOSH ,ORDER_TEXT= ,[PAGELIST] ,FILE1=0000001.TIF ,FILE2=00000002.TIF ,FILE3=0000003.TIF ,FILE4=0000004.TIF ,FILE5=0000005.TIF ,FILE6=0000006.TIF ,FILE7=0000007.TIF ,FILE8=0000008.TIF ,FILE9=0000009.TIF ,FILE10=0000010.TIF FILE11=0000011.TIF FILE12=0000012.TIF FILE13=0000013.TIF

[OrderDescription]